/ D-II(H) Sociology Paper-III 1

What are the sources which help in the formulation of Hypothesis.

प्राक्कल्पना के निर्माण के स्रोतों का वर्णन करें?
(उपकल्पना)

किसी भी अनुसंधान को एक निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए Hypothesis का निर्माण करना आवश्यक है। इसके कारण हमारा ध्यान एक विशिष्ट दिशा में केन्द्रित होता है और हम घटनाओं के अथाह समुन्द्र में सत्य को ढूंढने से बच जाते हैं। अर्थात Hypothesis सम्बद्ध तथ्यों के संकलन में सहायक होता है। P.V. Young ने ठिक ही लिखा है कि "The use of a hypothesis this prevents a blind search & indescriminate gathering of masses of date which may later prove irrelevant to the problem under study" (उपकल्पना के प्रयोग में उन तथ्यों की अंधी-खोज व अंधाधुंध संकलन पर नियंत्रण होता है जो बाद में अध्ययन की जानेवाली समस्या के लिए अप्रासंगिक बेकार सिद्ध हों।)

Hypothesis के सम्बन्ध में यह जानकारी प्राप्त करना भी आवश्यक प्रतीत होता है कि प्राक्कल्पना के निर्माण के कौन-कौन से स्रोत हैं। दरअसल प्राक्कल्पना के स्रोत वैयक्तिक भी हो सकते हैं और बाह्य भी। वैयक्तिक आधार पर Hypothesis का सबसे बड़ा स्रोत अनुसंधानकर्ता की अपनी अन्तदृष्टि, छोटी कल्पना, विचार या अनुभव हो सकता है। एक अनुसंधानकर्ता अपने अनुभव विचारों की मौलिकता तथा दुरदर्शिता के आधार पर कुछ उपयोगी कार्यकारी Hypothesis का निर्माण कर सकता है। साथ ही Hypothesis के निर्माण के कुछ बाह्य स्रोत भी हो सकते हैं इसके बाह्य स्रोतों के सम्बन्ध में G.A. Lundberg ने लिखा है कि "In serching for fruitful hypothesis we may draw upon the whole realm of poetry, literature philosophy & the large descriptive literature of Sociology & ethnology, including the speculative the ones of artists & penetrating thinkers; who have devoted themselves to a deep, intismation & unsubstantiated study of man caste (ogy of relationship")

(एक पद प्राक्कल्पना की खोज में हम कविता, साहित्य दर्शन समाजशास्त्र के विस्तृत वर्णनात्मक साहित्य, मानवजाति शास्त्र के रचनाकारों के काल्पनिक सिद्धांतो या उन गंभीर विचारकों के सिद्धांतो की सम्पूर्ण दुनियां में विचरन कर सकते हैं जिसमे कि मनुष्य के सामाजिक सम्बन्धों के गहन अध्ययन कार्य करने को नियोजित किया है।)

Linder & Hatt ने अपनी पुस्तक 'methods of Social research' में प्राक्कल्पना के निर्माण के चार स्रोतों का अध्ययन किया है जो निम्नलिखित है:-

P.T.O

(1) सामान्य संस्कृति (General culture) मनुष्य की गति शक्तियों को प्रभावित करने में संस्कृति के योगदान को स्वीकार करने से कोई इंकार नहीं कर सकता है तथा बेनेडिक्ट ने भी विभिन्न जातियों का अध्ययन कर यह बताया है कि एक व्यक्ति जिस संस्कृति में जन्म लेता और पलता है उसी के अनुरूप उसकी धारणाएँ, मनोवृत्ति, अनुभव तथा व्यवहार प्रतिमान उत्पन्न होते हैं। फलस्वरूप एक विशिष्ट संस्कृति में पलने वाले व्यक्ति द्वारा प्रतिपादित प्राक्कल्पनाओं पर भी उसकी संस्कृति की छाप दृष्टिगोचर होगी है अर्थात् प्राक्कल्पना का निर्माण उस संस्कृति द्वारा प्रभावित होता है, जिसमें एक विशिष्ट प्राक्कल्पना का निर्माण किया जाता है। उदाहरणार्थ – यदि एक अमेरिकन समाजशास्त्री तथा एक भारतीय समाजशास्त्री सामाजिक गतिशीलता के कारणों का अध्ययन करने के लिए Hypothesis का निर्माण करें तो दोनों ही भिन्न-भिन्न प्राक्कल्पनाओं को लेकर अध्ययन कार्य आरंभ करेंगे इसका कारण यह है कि अमेरिकन तथा भारतीय समाज की संस्कृतियाँ एक दूसरे से भिन्न हैं। सांस्कृतिक भिन्नताओं के कारण दोनों समाजों के अनुसंधानकर्ताओं द्वारा प्रतिपादित प्राक्कल्पनाओं में भिन्नता उत्पन्न होना अवश्यंभावी है, क्योंकी दोनों ही अपनी-अपनी संस्कृति को ध्यान में रखते हुए प्राक्कल्पना का निर्माण करेंगे। इस सम्बन्ध में Goode & Hatt ने भी लिखा है कि "अधिकांश सांस्कृतिक मूल्य केवल अनुसंधान के प्रति रुचि बढ़ाने में ही सहायक नहीं बल्कि लोक प्रज्ञा प्राक्कल्पनाओं के निर्माण में भी एक स्त्रोत के रूप में सहायक होते हैं।"

(2) वैज्ञानिक सिद्धांत (Scientific Theory) → विभिन्न विज्ञानों में विभिन्न घटनाओं से सम्बन्धित अनेकों सिद्धांत प्रतिपादित हुए रहते हैं। यदि कोई वैज्ञानिक ऐसी घटना का अध्ययन करना चाहता है, जिसका अध्ययन अतीत काल में किसी अनुसंधानकर्ता द्वारा किया गया हो तो अतीत में किए गए अध्ययन के आधार पर प्रतिपादित सिद्धांतों के आधार पर भी किसी नए Hypothesis का निर्माण किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि पूर्व में प्रतिपादित सिद्धांत किसी नए Hypothesis के निर्माण का एक स्त्रोत या आधार बनता है। इस सम्बन्ध में Goode & Hatt ने भी लिखा है, "Theory gives direction to research by showing what is known" (सिद्धांत एक विषय के सम्बन्ध में जो कुछ पता है वह बता कर शोध कार्य को दिशा प्रदान करता है।)

यदि अध्ययनकर्ता स्वतंत्र रूप से प्राक्कल्पनाओं का निर्माण करने लगे तो ऐसी प्राक्कल्पनाओं में वैज्ञानिकता की झलक कम मिलती है। इसके विपरीत यदि Hypothesis पूर्व स्थापित सिद्धांतों पर आधारित होता है तब इसे एक अच्छा Hypothesis समझा जाता है, क्योंकी इससे यथार्थ ज्ञान

Scanned with CamScanner

की प्राप्ति में मदद मिलती है। इस तरह का विचार प्रस्तुत करते हुए Goode & Hatt ने भी लिखा है "..... When research is systematically based upon a body of existing theory a genuine, contribution in knowledge is more likely to result." (जब अनुसंधान व्यवस्थित रूप से पूर्व स्थापित सिद्धांतों पर आधारित रहता है तब ज्ञान में यथार्थ योगदान की संभावना अधिक हो जाती है। उदाहरणार्थ - यदि कोई अनुसंधानकर्ता आत्महत्या की समस्या का अध्ययन करना चाहता हो तब वह इससे सम्बन्धित प्राक्कल्पना का निर्माण करने के लिए फ्रांसीसी समाजशास्त्री Emile Durkheim द्वारा प्रस्तुत Theory of suicide से मदद ले सकता है। इस तरह स्पष्ट होता है कि अतीत में प्रतिपादित वैज्ञानिक सिद्धांत भी प्राक्कल्पनाओं के निर्माण के आधार या स्रोत बन सकते हैं।

(3) समरूपता (Analogy) → जब दो घटनाओं या चीजों में समानता के साथ साथ भिन्नता भी पाई जाती है, तब उसे ही Analogy कहा जाता है। दो दशाओं या घटनाओं के बीच पाई जाने वाली समानताओं के आधार पर भी Hypothesis का निर्माण किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि Analogy भी Working Hypothesis का स्रोत बनती है और इस Analogy के आधार पर भी प्राक्कल्पनाओं का निर्माण किया जा सकता है। ब्रिटिश समाजशास्त्री Herbert Spencer ने भी organism तथा human society के बीच पाई जाने वाली कुछ समानताओं के आधार Hypothesis का निर्माण किया था। इन्होंने यह पाया कि जिस तरह Human organism का धीरे-धीरे विकास होता है तथा उसके structural & functional complexity में वृद्धि होती है उसी तरह मानव समाज का भी धीरे-धीरे विकास होता है और इस विकास के कारण समाज के ढाँचे एवं कार्यों में जटिलताओं की वृद्धि होती है। इसी तरह इन्होंने पाया कि जिस तरह एक organism कुछ cells & tissues से बना होता है उसी तरह समाज में भी कुछ cells & tissues पाए जाते हैं। इन सब समानताओं के आधार पर Spencer ने एक Hypothesis बनाया कि "Society is like a biological organism." इस वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दो दशाओं के बीच पाई जाने वाली समरूपता भी एक Working Hypothesis के निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत बन सकती है।

(4) व्यक्तिगत अनुभव (personal experience) अथवा Knowledge of research itself → अनुसंधानकर्ता का व्यक्तिगत अनुभव भी विभिन्न प्राक्कल्पनाओं के निर्माण का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। अनुसंधानकर्ता एक शिक्षित तथा अनुभवी व्यक्ति होता है और उसे भिन्न-भिन्न समस्याओं या घटनाओं के बारे में ज्ञान या अनुभव प्राप्त रहता है और उस ज्ञान और अनुभव के आधार पर भी वह विभिन्न समस्याओं के अध्ययन के लिए कुछ Working Hypothesis

का निर्माण कर सकता है। बहुत से विचारकों को अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर प्राक्कल्पनाओं का निर्माण किया है। उदाहरणार्थ – इटली के एक चिकित्सक Lombroso ने अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर अपराध से सम्बन्धित इस प्राक्कल्पना का निर्माण किया कि अपराधी जन्मजात होते हैं तथा अपनी शारीरिक विशेषताओं में वे गैर अपराधियों से भिन्न होते हैं। इसी तरह Sir Herbert Risley 1901 ई० में भारतीय जनसंख्या जनगणना की अध्यक्षक नियुक्त हुए थे। उस समय भारतीय जनसंख्या के आँकड़ों को देखने से जैसा उन्हें अनुभव या ज्ञान हुआ उसी के आधार पर उन्होंने जाति प्रथा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में Hypothesis का निर्माण किया। दरअसल जब कभी कोई व्यक्ति कुछ विशेष परिस्थितियों में घटनाओं को एक विशेष रूप में घटित होते हुए देखता है तो उसके मन में cause effect relationship की एक विशेष धारणा बन जाती है और वह इसी धारणा या अनुभवों के आधार पर प्राक्कल्पनाओं का निर्माण करता है। P.V. Young ने भी इस सम्बन्ध में बताया है कि अपने तथ्यों के विषय में सामान्य ज्ञान के आधार पर एक वैज्ञानिक उन विस्तृत कारकों को छाँट लेता है जो कि अध्ययन की जानेवाली समस्याओं पर रोशनी डाल सके। अर्थात P.V. Young ने भी Goode & Hatt के इस विचार का समर्थन किया है कि व्यक्तिगत अनुभव भी Hypothesis के निर्माण का महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

(5) पुस्तक, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों का अध्ययन (The study of the books, Magazines & News Paper) → विभिन्न पुस्तकों तथा पत्रिकाओं में विभिन्न घटनाओं के कारणों का उल्लेख रहता है। इसी तरह विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों तथा संपादकिय टिप्पणियों से भी विभिन्न घटनाओं के कार्यकरण सम्बन्धों की जानकारी प्राप्त होती है। अतः पत्र-पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों के अध्ययन के आधार पर भी Hypothesis का निर्माण किया जा सकता है।

(6) मित्रों तथा अन्य लोगों के साथ वार्तालाप (Gossip with friends & others) → विभिन्न लोगों से वार्तालाप से भी विभिन्न घटनाओं को संचालित करने वाले कारकों की जानकारी प्राप्त हो सकती है और इस जानकारी के आधार पर भी working Hypothesis का निर्माण किया जा सकता है।

S.N. Choudhary
L.N.M.U

Scanned with CamScanner